डा0 विजयनाथ ज्योतिषाचार्य
2F, ST-11, Zone I
BHILAI, KHURSIPAR Durg. (C.G.)

व्यापार एवं उद्योग

(एक ज्योतिश दृष्टिकोण)

सुप्रसिद्ध कहावत है आवश्यकता अविष्कार की जननी है।

मानव जीवन के लिए इस संसार में हर एक वस्तुओं की आवश्यकता पडती है जिसकी पूर्ति के लिए कुछ स्वयं, कुछ बाजार के माध्यम से पूरा करता है। मानवीय जीवन का इतिहास बहुत पुराना है। हमारी सामाजिक प्रकिया लेन–देन पर टीकी है।

व्यापार के अन्तर्गत जरूरतमंद लोंगो तक सेवा कैसे की जाय, माध्यम क्या होनी चाहिए इसके लिए लेन–देने कय–विकय ही व्यापार कहा जाता हैं। प्राचीन सभ्यता से लेकर आज तक यह प्रकिया सतत् चलती रही है, एक देश से दूसरे देश के बीच व्यापारिक सम्बन्ध बहुत पुराने है उस समय भारतीय उपमहाद्विप को एक महान निर्यातक केन्द्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका रही, कृषिपालन, खेती, पुनाई, शिल्पकला, मूर्तिकला बर्तनो की बनावट, कुटीर उद्योग आदि अनेक धन्धे थे जिनके माध्यम से आवश्यकता की पूर्ति होती थी। जहॉ तक साधन का प्रश्न था वह मुख्यतया बैलगाडी, पशुओं की सवारी, सामुद्रिक मार्ग का माध्यम था। आधुनिक समय में व्यापार एक वृहत रूप धारण किया जिसको उद्योग के नाम से जाना जाता है, कुटीर उद्योगों की जगह industries ने जगह ले किया जहॉ बड़े–बड़े समूहों में लोगो को रोजगार मुहैया कराया। जैसे–जैसे मांगे बढती गयी वैसे–वैसे आकार बदलता गया, आप व्यापार की जगह नेटवर्क ने अपना स्थान बना लिया था, यो कहिए कि जिस तरह से आवश्यकता की मांग बढ़ी वैसे–वैसे उद्योग भी बढ़ता गया।

सभ्यता के विकास ने अनेक रास्ते का जन्म दिया, व्यापार की भाषा Trade में बदली, एक दूसरे देश से लेन–देन को Foreign Trade, राज्यस्तरीय को State Level ग्रामीणस्तर पर जो व्यापार हो रहा है वह Local-Trade कहलाने लगा। साधनों में बढ़ोत्तरी हुयी, रेल यातायात सामुद्रिक जहाजे, गाडी–वाहन, दूर संचार व्यवस्था ने पूरा स्वरूप बदल दिया, श्रम मेहनत तथा समय का बचत हुआ, कुछ ही समय में पूर्ति हो जाती है।

नये नये टेक्नोलॉजी, मशीने उद्योग में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है हर क्षेत्र में मशीनो ने अपना स्थान बना लिया, यह सब विज्ञान का ही चमत्कार है।

व्यापार–व्यवसाय, उद्योग, कार्य क्षेत्र, चाहे शासकीय हो या अर्द्धशासकीय अथवा निजी संस्थान हो, शिक्षा व्यवसाय के चयन में ज्योतिष शास्त्र जैसे विषय को नकारा नही जा सकता। शास्त्र का ऐसा मानना है कि समस्त देवी–देवताओं ने अपनी उर्जा गृह–पिंड को दिया तत्पश्चात मानव के हाथ की लकीरों के माध्यम से मानव के मन–मस्तिष्क में पहुँचा, वहॉ से फिर अपना प्रभाव सभी कार्यो पर पडनें लगा। सफलता, असफलता, जय–पराजय, हानि–लाभ, दुखसुख सबका कारण ग्रहों की मुमता अथवा असुमता ही है।

अतः समय समय पर ज्योतिष सलाह लिया जाता है। ज्योतिष और मानव का इतिहास बहुत पुराना है।

इस सम्बन्ध में लिखा है–

इन्दुः सर्वम बीजाभो लग्नं तु कुसुमप्रभम् ।
फलेन सदृशोंदशश्च भावः स्वादुसमः स्मृतः।।

अर्थात, चन्द्रमा बीज, लग्न पुष्प, नवांशफल तथा भाव स्वार्थ के समान होता है। अतः नवांश, दशमांश कुण्डली में अजिविका चयन में विशेष भूमिका रहती है।

भारतवर्ष का जिन–जिन देशो से व्यापारिक, सांस्कृतिक और धार्मिक संम्बन्ध था, वहॉ के लोग आये और अपने निरिक्षण तथा अनुभवों को पुस्तकों के रूप में ले गये। महान विद्वान पैशसेल्सस मत है कि– ज्योतिर्विज्ञान मात्र आकाशीय पिंड की गति, स्थिति की जानकारी तक ही सीमित नही है, वरन् ग्रहो के पृथ्वी के वातावरण एवं प्राणियों पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन, विश्लेषण और परस्पर आदान–प्रदान से लाभ उठाना भी इसका उद्देश्य है। उनका मानना हैं कि जिस प्रकार एक ही भूमि में बोये गये आम, नींबू, बबूल अपनी प्रकृति के अनुसार गुण–धर्म का चयन कर लेते हैं और सोने के खदान से सोना, लोहे की खदान से लौह आकर्षित होते हैं ठीक उसी प्रकार पृथ्वी के जीवधारी विश्वचेतना के अथाह समुद्र में रहते अपनी प्रकृति के अनुसार गुणों का चयन करती है।

अतः ज्योतिषशास्त्र भी अपने गुणो के आधार पर व्यापार, शिक्षा, उद्योग, वातावरण, व्यवहार, नीति–निर्धारण में चयन करती है।

डा0 विजयनाथ ज्योतिषाचार्य
2F, ST-11, Zone I
BHILAI, KHURSIPAR Durg. (C.G.)